



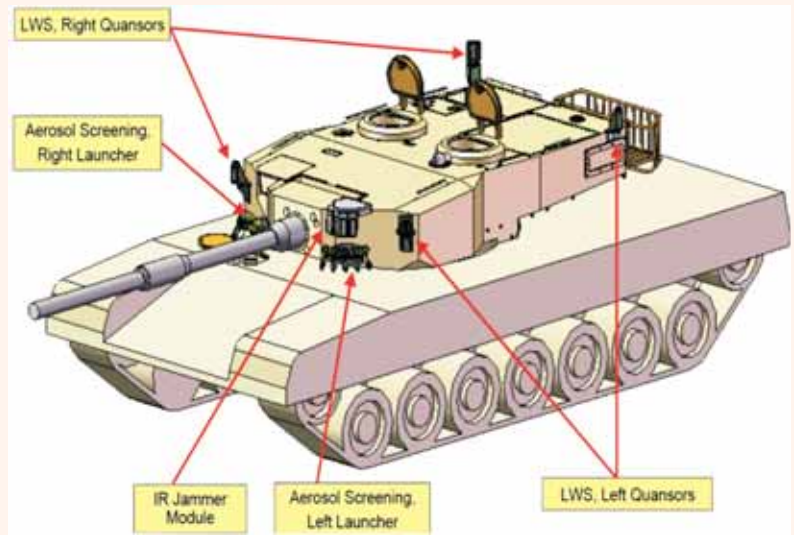
डीआरडीओ

डी आर डी ओ की मासिक गृह पत्रिका

समाचार

कवचीय लड़ाकू समाघात वाहनों हेतु प्रतिरक्षात्मक प्रणाली परियोजना

संग्राम वाहन अनुसंधान तथा विकास स्थापना (सी वी आर डी ई), चेन्नई द्वारा कवचीय लड़ाकू समाघात वाहनों हेतु प्रतिरक्षात्मक प्रणाली विकास परियोजना का शुभारम्भ किया गया है।



कवचीय लड़ाकू समाघात वाहनों हेतु प्रतिरक्षात्मक प्रणाली।

इस अंक में

- कवचीय लड़ाकू समाघात वाहनों हेतु प्रतिरक्षात्मक प्रणाली परियोजना
- राष्ट्रीय लेजर सम्मेलन
- राष्ट्रीय श्रव्य विज्ञान सम्मेलन
- प्रौद्योगिकी राष्ट्रवाद में भारतीय महिलाओं की भूमिका
- रोबोटिक्स तथा स्वचलित वाहन : विचार तथा परिकल्पनाएं
- मानव संसाधन विकास गतिविधियां
- कार्मिक समाचार
 - नियुक्ति
 - प्रोन्नति
 - सेवानिवृत्ति
- पेटेंट अनुमोदित
- भारत निर्माण अभियान में डी आर एल, तेजपुर
- डी आर डी ओ स्वर्ण जयंती प्रतियोगिता
- डी आर डी ओ स्वर्ण जयंती छात्र प्रतियोगिता
- सम्मान
- डी आर डी ओ दिवस समारोह
- खेलकूद गतिविधियां
- प्रदर्शनी में प्रतिभागिता (कोसाम्बा-2009)
- डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं में पधारे अतिथिगण

इससे टैंकों को टैंकरोधी प्रक्षेपास्त्रों से बचाने तथा लक्ष्य अधिग्रहण प्रणालियों से खोज पाने की संभावना कम करने में मदद मिलेगी। इस परियोजना के अंतर्गत दो मुख्य प्रणालियों, नामतः उन्नत लेजर चैतावनी तथा प्रति उपाय प्रणाली (ए एल डब्ल्यू सी एस) एवं सुवाह्य छद्मावरण प्रणाली (एम सी एस) का विकास किया जा रहा है।

एम सी एस का प्रयोग वाहन के मल्टीस्पैक्ट्रल सिग्नेचर प्रबंधन के लिए होगा जिससे सभी प्रकार के सेंसरों तथा स्मार्ट म्यूनिशनों से भेदन की संभावना कम हो जाएगी। एम सी एस प्रणाली का विकास बाराक्यूडा छद्मावरण लिमिटेड, गुड़गाव के साथ मिलकर किया जा रहा है। इस प्रणाली को मुख्य युद्धक टैंक अर्जुन के साथ समेकित किया गया है तथा इसके क्षमता परीक्षण सफल रहे हैं। यह पद्धति तथा प्रौद्योगिकी किसी भी अन्य कवचीय समाघात वाहन हेतु भी कारगर है। ए एल डब्ल्यू सी एस प्रणाली के अवयव हैं, लेजर चैतावनी प्रणाली, आई आर जैमर तथा ऐरोसोल स्मोक ग्रेनेड प्रणाली। इस प्रणाली को मुख्य युद्धक टैंक अर्जुन के साथ समेकित किया जाएगा तथा इसके क्षमता परीक्षण वर्ष 2009 में ग्रीष्म ऋतु के दौरान किए जाएंगे।

राष्ट्रीय लेजर सम्मेलन

लेजर विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी केंद्र (लेसटेक), दिल्ली, में 07-10 जनवरी 2009 के दौरान आठवें डी ए ई-बी आर एल एस राष्ट्रीय लेजर सम्मेलन (एन एल एस-2008) का आयोजन हुआ। इस चार दिवसीय सम्मेलन को आणविक उर्जा विभाग (डी ए ई) तथा रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन (डी आर डी ओ) द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया। इस सम्मेलन का मूल विषय उच्च शक्ति उच्च उर्जा लेजर था। सम्मेलन के दौरान मूलभूत लेजर भैतिकी तथा अभियांत्रिकी एवं विज्ञान में लेजर प्रौद्योगिकी अनुप्रयोगों पर विस्तृत प्रकाश डाला गया। संगोष्ठी में विभिन्न राष्ट्रीय अनुसंधान तथा विकास प्रयोगशालाओं, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संस्थानों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों, तथा भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों से 500 से अधिक वैज्ञानिकों, प्रौद्योगिकीविदों, शिक्षकों, तथा छात्रों ने भाग लिया। अमेरिका, जर्मनी, इटली, जापान, सिंगापुर इत्यादि देशों से कुछ विशिष्ट वैज्ञानिकों/शोधकर्ताओं ने भी इसमें भाग लिया।

डॉ आर श्रीहरि राव, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (इलैक्ट्रॉनिक्स एवं कम्प्यूटर विज्ञान) ने अपने उद्घाटन भाषण में आधुनिक युद्ध में लेजरों तथा ऑप्टोइलैक्ट्रॉनिक प्रणालियों की संवेदनशील भूमिका तथा डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं द्वारा इस दिशा में किए जा रहे कार्यों पर प्रकाश डाला। आपने बताया कि लेजर-आधारित निर्देशित उर्जा शस्त्रों के विकास में वैश्विक स्तर पर वैज्ञानिक, अभियंता, प्रौद्योगिकीविद, तथा युद्ध रणनीतिकार गहरी रुचि ले रहे हैं। डॉ वी के सारस्वत, विशिष्ट वैज्ञानिक, मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (प्रक्षेपास्त्र तथा सामरिक प्रणाली) ने उच्च शक्ति लेजरों की रक्षा क्षेत्र में भूमिका विषय पर अध्यक्षीय भाषण दिया। डॉ सारस्वत ने इस बात पर बल दिया कि अगले दो दशकों में लेजर-आधारित निर्देशित उर्जा शस्त्रों का महत्व बढ़ेगा तथा 2025 तक इसी प्रकार के शस्त्र युद्ध क्षेत्र में मुख्य भूमिका निभायेंगे। आपने बताया कि लेजरों का प्रयोग उपद्रवियों के नियंत्रण, आंतकरोधी प्रचालनों इत्यादि में किया जाएगा तथा उच्च शक्ति लेजर-आधारित शस्त्रों को भू-आधारित, वायु तथा अंतरिक्ष-आधारित स्थानों से हवाई अड्डों, समुद्री पत्तनों, तथा वायुयानों को प्रक्षेपास्त्र हमलों से बचाने में भी उपयोग में लाया जा सकेगा।

सम्मेलन के दौरान विभिन्न विषयों पर 18 तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया जिनमें लेजर विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी से संबंधित विषय, जैसे कि लेजर भौतिकी तथा प्रौद्योगिकी, अत्यधिक तेज लेजर तथा उनके अनुप्रयोग, रक्षा, उद्योग तथा अंतरिक्ष में लेजर, लेजर रिमोट सेंसिंग, लेजर-आधारित यंत्रिकरण, इत्यादि शामिल थे। सम्मेलन के दौरान विशेष सत्र आमंत्रित वार्ताएं, मौखिक प्रस्तुतियां, तथा पोस्टर प्रस्तुतियां आयोजित की गईं जिनमें अग्रणी विशेषज्ञों तथा युवा शोधकर्ताओं ने अपने विचार रखे। रक्षा क्षेत्र में लेजर तकनीकी सत्र के दौरान डॉ ए के मैनी, निदेशक, लेसटेक द्वारा युद्ध क्षेत्र की लेजर तथा ऑप्टोइलैक्ट्रॉनिक प्रणालियां विषय पर आमंत्रित वार्ता प्रस्तुत की गई। आपने अपनी वार्ता के दौरान लेजर तथा ऑप्टोइलैक्ट्रॉनिक प्रणालियों के

वर्तमान तथा निकट भविष्य में होने वाले सैन्य अनुप्रयोगों पर प्रकाश डाला। आपने विशेषकर निकट भविष्य में होने वाले आयामों, वर्तमान प्रणालियों में सुधार की संभावनाओं तथा नवीन अनुप्रयोगों को विस्तारपूर्वक बताया। आपने इस क्षेत्र में लेसटेक द्वारा किए जा रहे कार्यों पर भी प्रकाश डाला। एक अन्य आमंत्रित वार्ता में डॉ ए के राजदान, वैज्ञानिक एफ, लेसटेक ने रसायनिक तथा जैविक युद्ध उत्प्रेरकों के खतरों पर प्रकाश डालते हुए इनका पता लगाने हेतु लेजर-



सम्मेलन के उद्घाटन के अवसर पर श्री ए के मैनी, निदेशक, लेसटेक दीप प्रज्वलित करते हुए।



डॉ वी के सारस्वत, ई ओ सी एम उत्पादन प्रदर्शनी में वार्तालाप करते हुए।

आधारित रिमोट सेंसिंग तकनीकों के बारे में बताया। इससे सुरक्षित रहते हुए संभावित सी बी डब्ल्यू उत्प्रेरकों की भनक लगाई जा सकेगी, जो कि परंपरागत भेदी तकनीकों से संभव नहीं है।

संगोष्ठी के दौरान तकनीकी प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया जिसमें लेजर प्रकाशीय उत्पादों/उपकरणों को दर्शाया गया। एक अन्य प्रदर्शनी में लेसटेक द्वारा विकसित उत्पादों तथा प्रौद्योगिकियों, इसमें ई ओ सी एम प्रणालियां तथा प्रौद्योगिकियां, ठोसावस्था लेजर, लिडार प्रौद्योगिकी, अडेप्टिव ऑप्टिक्स तथा उच्च शक्ति लेजर अवयवों इत्यादि को प्रदर्शित किया गया।

राष्ट्रीय श्रव्य विज्ञान सम्मेलन

डी आर डी ओ स्वर्ण जयंती समारोह श्रृंखला के एक भाग के रूप में नौसेना विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला (एन एस टी एल), विशाखापत्तनम द्वारा 23-24 दिसम्बर 2008 के दौरान राष्ट्रीय श्रव्य विज्ञान सम्मेलन (एन एस ए 2008) का आयोजन किया गया। इसके समानांतर डी आर डी ओ स्वर्ण जयंती प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया। इस प्रदर्शनी में नौसेना विज्ञान समूह की प्रयोगशालाओं, नामतः एन एस टी एल, एन पी ओ एल तथा एन एम आर एल ने भाग लिया। इसी प्रयोगशाला द्वारा कम ध्वनि उत्पन्न करने वाली प्रौद्योगिकियों पर 22 दिसम्बर 2008 को एकदिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।



मुख्य अतिथि, वाइस एडमिरल निर्मल के वर्मा, स्मारिका का विमोचन करते हुए।

वाइस एडमिरल निर्मल के वर्मा, परम विशिष्ट सेवा मेडल, अति विशिष्ट सेवा मेडल, ए डी सी, एफ ओ सी इन सी ने इस सम्मेलन का उद्घाटन किया। इस अवसर पर डॉ बी सत्यनारायण, कुलपति, आंध्र विश्वविद्यालय, विशाखापत्तनम, तथा डॉ ए शिवथानु पिल्लई, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (नौसेना प्रणाली एवं आयुध समाघात अभियांत्रिकी) विशिष्ट अतिथि थे। सम्मेलन में नौसेना, डी आर डी ओ, आंध्र विश्वविद्यालय तथा अभियांत्रिकी महाविद्यालयों से 140 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

सम्मेलन के दौरान श्रव्य विज्ञान के विशेषज्ञों ने आमंत्रित वार्ताएं प्रस्तुत कीं। श्री एस अनंतनारायणन, निदेशक, एन पी ओ एल, कोच्ची द्वारा एम एस नारायणन स्मृति व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। डॉ के समुद्र विजय, वैज्ञानिक, टी आई एफ आर, मुंबई द्वारा प्रो. रायस अहमद स्मृति व्याख्यान दिया गया। डॉ एम कुमारसन, निदेशक, अंतर्राष्ट्रीय बधिर शोध संस्थान, चेन्नई द्वारा श्रीमती मीरा पॉल स्मृति व्याख्यान दिया गया। डॉ एस एस अग्रवाल ने इसकी अध्यक्षता की। उद्घाटन समारोह के दौरान डॉ कुमारसन तथा डॉ एस एस अग्रवाल को स्वर्ण पदक तथा डॉ ए रामचन्द्रय्या को डॉ ए एस पॉल, अध्यक्ष आई आर आई डी, चेन्नई, द्वारा रजत पदक प्रदान किया गया। जे ए एस आई में वर्ष 2007 में प्रकाशित सर्वोत्तम शोध-पत्र के लिए डॉ वी भुजंग राव, अध्यक्ष, ए एस आई द्वारा डॉ एम एल मुंजाल तथा डॉ टी एस एस नारायणन को सर सी वी रामन सम्मान प्रदान किया गया।

डॉ वी सत्यनारायण, कुलपति, आंध्र विश्वविद्यालय द्वारा प्रदर्शनी का उद्घाटन किया गया। प्रदर्शनी को आम जनता के लिए भी खुला रखा गया तथा इसमें लोगों ने भरपूर रुचि ली, लगभग 15000 व्यक्तियों ने प्रदर्शनी को देखा। इनमें डॉ पिल्लई, वाइस एडमिरल वर्मा, भारतीय नौसेना के वरिष्ठ अधिकारीगण तथा स्थानीय गणमान्य विभूतिगण शामिल थे।

प्रदर्शनी का उद्देश्य जनसाधारण तथा भावी वैज्ञानिकों/अभियंताओं को डी आर डी ओ के योगदान के प्रति अवगत कराना था। प्रदर्शनी में सेनाओं में शामिल उत्पादों, विकासाधीन उत्पादों, तथा नवीनतम प्रौद्योगिकियों/प्रणालियों

को विभिन्न वीडियो प्रस्तुतियों के माध्यम से भी दर्शाया गया। सहयोगी उद्योगों द्वारा भी नौसैनिक अनुप्रयोगों हेतु श्रृंखला प्रौद्योगिकियों को दर्शाया गया। एन एस ए 2008 के समापन समारोह में डॉ एम एल मुंजाल, मुख्य अतिथि थे। यह आयोजन अपने उद्देश्यों में तथा युवा मस्तिष्क पर वैज्ञानिक छाप छोड़ने में सफल रहा।

प्रौद्योगिकी राष्ट्रवाद में भारतीय महिलाओं की भूमिका

डी आर डी ओ स्वर्ण जयंती समारोह श्रृंखला तथा एच ई एम आर एल शताब्दी समारोह के भाग के रूप में उच्च ऊर्जा पदार्थ अनुसंधान प्रयोगशाला (एच ई एम आर एल), पुणे द्वारा 11 दिसम्बर 2008 को प्रौद्योगिकी राष्ट्रवाद में भारतीय महिलाओं की भूमिका विषय पर एकदिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन मुख्य अतिथि श्रीमती वी एम बेन्द्रे, निदेशक केन्द्रीय जल तथा शक्ति शोध स्टेशन सी डब्ल्यू पी आर एल, पुणे द्वारा किया गया। अपने उद्घाटन उद्बोधन में श्रीमती बेन्द्रे ने प्रतिभागियों से राष्ट्र के बहुआयामी विकास में योगदान का आह्वान किया। आपने बताया कि भारत गांवों में बसता है तथा हमें यदि महिलाओं का उत्थान करना है तो गांवों की महिलाओं को शिक्षा तथा व्यवसायिक पाठ्यक्रमों हेतु प्रेरित करना होगा। इस कार्यशाला का उद्देश्य उच्च उर्जा पदार्थों, प्रखेपास्त्रों, संयोजित पदार्थों, औषधी, मानविकी, कानून, प्रबंधन तथा सुरक्षा के क्षेत्रों में हुए आधुनिक विकासों पर प्रकाश डालना था। कार्यशाला से प्रतिभागियों को राष्ट्र विकास में योगदान के लिए प्रेरणा मिली। इस अवसर पर मुख्य अतिथि द्वारा गृह पत्रिका उर्जा का विमोचन भी किया गया।



श्रीमती बेन्द्रे, दीप प्रज्वलित करते हुए। साथ में हैं, डॉ ए शुभनंदा राव।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि, श्रीमती डॉ रोहिणी देवी, प्रौद्योगिकी निदेशक, एच टी सी सी, उन्नत प्रणाली प्रयोगशाला, हैदराबाद ने उच्च ताप अनुप्रयोगों हेतु कार्बन संयोजित पदार्थों के विकास पर प्रकाश डाला। आपने प्रौद्योगिकीय राष्ट्रवाद के महत्व पर भी प्रकाश डाला। आपने बताया कि डी आर डी ओ द्वारा कार्बन-कार्बन संयोजित पदार्थों का विकास किया गया है जो कि 3000 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान को सहन कर सकते हैं। आपने इस विकास में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों, डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं, तथा उद्योग जगत की भूमिका पर भी प्रकाश डाला।

डॉ ए शुभनंदा राव, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, एच ई एम आर एल तथा अध्यक्ष, आयोजन समिति ने अपने स्वागत भाषण में बताया कि इस राष्ट्रीय कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य भारतीय महिलाओं की उपलब्धियों को उजागर करना है। आपने बताया कि महिलाओं ने अनेक प्रौद्योगिकीय विकासों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है तथा उन्हें भविष्य में भी उपलब्धियों हेतु निरंतर प्रयासरत रहना चाहिए।

कार्यशाला में डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं की महिला वैज्ञानिकों, पुलिस, चिकित्सा, पत्रकारिता तथा कला क्षेत्र के विशेषज्ञों ने व्याख्यान दिए तथा अनेक मुख्य विषयों का गहन मंथन किया। बढ़ते अपराधों पर नियंत्रण, हाल के चिकित्सीय विकास, अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान तथा विकास सहयोग, प्रसूति विज्ञान, सुरक्षा, कम्प्यूटरों की दुनिया, उच्च उर्जा पदार्थ, इत्यादि विषयों पर व्याख्यान हुए। कार्यशाला में डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिकों सहित 200 प्रतिभागियों ने भाग लिया। श्रीमती रेनी रॉय, उपाध्यक्ष, आयोजन समिति ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

रोबोटिक्स तथा स्वचलित वाहन : विचार तथा परिकल्पनाएं

डी आर डी ओ स्वर्ण जयंती समारोह श्रृंखला के भाग के रूप में अनुसंधान तथा विकास स्थापना (इंजीनियर्स) (आर एंड डी ई (इंजी)), पुणे, में 07-08 नवम्बर 2008 में रोबोटिक्स तथा स्वचलित वाहन : विचार तथा परिकल्पनाएं नामक विषय पर एक विचारगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसका आयोजन वैमानिकी विकास स्थापना (ए डी ई), बैंगलोर; कृत्रिम ज्ञान तथा रोबोटिकी केंद्र (केयर), बैंगलोर; संग्राम वाहन अनुसंधान तथा विकास स्थापना (सी वी आर डी ई), चेन्नई; नौसेना विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला (एन एस टी एल), विशाखापत्तनम; वाहन अनुसंधान तथा विकास स्थापना (वी आर डी ई), अहमदनगर; तथा आर एंड डी ई (इंजी) द्वारा संयुक्त रूप से किया गया।



डॉ ए शिवथानु पिल्लई, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (नौसेना प्रणाली एवं आयुध समाघात अभियांत्रिकी), दीप प्रज्वलित करते हुए।

इस विचारगोष्ठी का उद्घाटन डॉ एस बैनर्जी, निदेशक, भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र, मुम्बई, द्वारा किया गया। डॉ ए शिवथानु पिल्लई, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (नौसेना प्रणाली एवं आयुध समाघात अभियांत्रिकी) ने रोबोटिक्स में उभरते आयाम विषय पर उद्घाटन उद्बोधन दिया। डॉ बैनर्जी ने सुवाह्य रोबोटिक्स में चुनौतियां विषय पर मुख्य उद्बोधन दिया।

विचारगोष्ठी में तीन सत्रों का आयोजन किया गया। प्रथम सत्र उपयोक्ता परिप्रेक्ष्य पर था, इसमें उपयोक्ता आवश्यकताओं, विशेषज्ञताओं, तथा परियोजनाओं पर थल सेना, नौसेना, तथा डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं के विशेषज्ञों ने व्याख्यान दिए।

दूसरा सत्र उद्योग दर्शन विषय पर था, इसमें टाटा मोटर्स, वेवलेट समूह, पुणे ; सिस्टेमेन्टिक्स लिमिटेड, बैंगलोर ; प्रिसिजन ऑटोमेशन तथा रोबोटिक्स आई लिमिटेड, पुणे ; तथा ई सी आई एल, हैदराबाद, के प्रतिनिधियों ने उद्योगों में चल रहे शोध की जानकारी दी।

तीसरा सत्र शोध तथा अकादमिक परिप्रेक्ष्य पर था, इसमें डॉ एल एम पटनायक, कुलपति, रक्षा उन्नत प्रौद्योगिकी संस्थान (डी आई ए टी), पुणे ने स्वचलित प्रणालियों में चुनौतियां विषय पर प्रस्तुति दी। इस सत्र में भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र (बार्क) मुम्बई ; भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान केन्द्र (इसरो) बैंगलोर ; भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आई आई टी), खड़गपुर ; तथा राष्ट्रीय समुद्रविज्ञान संस्थान, गोवा, के अनेक विशेषज्ञों ने अपने कार्यों के बारे में जानकारी दी।

इस विचारगोष्ठी में लगभग 200 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रतिभागीगण सेना ; नौसेना ; वायुसेना ; अर्धसैनिक बलों, जैसे कि एन एस जी ; पुलिस ; उद्योग ; अकादमी तथा वैज्ञानिक संगठनों, जैसे कि इसरो ; भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र ; सी डैक ; डी एस टी ; एन आई ओ ; सी एम ई आर आई इत्यादि से थे। विचारगोष्ठी से विभिन्न संगठनों में इस क्षेत्र में कार्यरत कर्मियों को विचारों के आदान-प्रदान का सशक्त मंच मिला तथा भविष्य में रक्षा सेवाओं तथा असैनिक संगठनों की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु योजना बनाने का अवसर भी प्राप्त हुआ।

मानव संसाधन विकास गतिविधियां

पाठ्यक्रम / संगोष्ठी / सम्मेलन / कार्यशाला

रक्षा जैव अभियांत्रिकी तथा चिकित्सा-इलेक्ट्रो प्रयोगशाला, बेंगलोर

रक्षा जैव अभियांत्रिकी तथा चिकित्सा-इलेक्ट्रो प्रयोगशाला (डेबेल), बेंगलोर, द्वारा 27-30 जनवरी 2009 के दौरान बायोमेडिकल सेंसर्स, बायोसैसर्स एंड सिस्टम्स इंजीनियरिंग नामक विषय पर एक पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। डॉ वी सी पडकी, निदेशक, डेबेल ने इस पाठ्यक्रम का उद्घाटन किया गया। आपने बायोनिक आई पर मुख्य सम्बोधन भी दिया। पाठ्यक्रम में संबंधित क्षेत्र में नवीन एवं मूलभूत प्रौद्योगिकियों को शामिल किया गया। पाठ्यक्रम में शामिल विषय थे, बायोमेडिकल सिग्नल प्रोसेसिंग, बायोमेडिकल इमेज प्रोसेसिंग, सेंसर्स बेस्ड ऑन फाइबर ऑप्टिक ग्रेटिंग्स, कार्बन नैनोट्यूब्स एंड माइक्रोएर्रे एंड माइक्रोफ्लूइडिस इत्यादि। विभिन्न विषयों पर 16 व्याख्यान दिए गए। वक्ता डी आर डी ओ, भारतीय विज्ञान संस्थानों, निमहेंस एवं अन्ना विश्वविद्यालय से थे। प्रतिभागियों को पाठ्यक्रम सामग्री के रूप में सी डी तथा अन्य मुद्रित सामग्री प्रदान की गई।

रक्षा वैज्ञानिक सूचना तथा प्रलेखन केंद्र, दिल्ली

रक्षा वैज्ञानिक सूचना तथा प्रलेखन केंद्र (डेसीडॉक), दिल्ली द्वारा मेटकॉफ हाउस परिसर में स्थित नालंदा सभागार में 12-13 फरवरी 2009 के दौरान अनुसंधान तथा विकास में ज्ञान प्रबंधन की भूमिका नामक विषय पर दो-दिवसीय अखिल भारतीय राजभाषा वैज्ञानिक/तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के दौरान 44 शोध-पत्र/आलेख प्रस्तुत किए गए। संगोष्ठी में देश भर की डी आर डी ओ की विभिन्न प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं, अन्य वैज्ञानिक एवं अनुसंधान संस्थानों तथा विभिन्न विश्वविद्यालयों से आए लगभग 135 प्रतिभागियों ने भाग लिया। संगोष्ठी में 06 तकनीकी सत्रों के अंतर्गत प्रस्तुतियां हुईं। ये सत्र क्रमशः ज्ञान प्रबंधन, संरक्षण, डिजिटल पुस्तकालय, प्रौद्योगिकी, नई दिशाएं तथा विविधा थे।



संगोष्ठी के शुभारम्भ अवसर पर सरस्वती वंदना पाठ।

संगोष्ठी का शुभारम्भ दिनांक 12 फरवरी 2009 को सरस्वती वंदना एवं दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। संगोष्ठी का उद्घाटन पदमश्री डॉ पी एस गोयल, अध्यक्ष, भर्ती तथा मूल्यांकन केन्द्र, डी आर डी ओ, दिल्ली, के करकमलों द्वारा हुआ। इस अवसर पर श्री सुरेन्द्र कुमार, भूतपूर्व निदेशक तथा उत्कृष्ट वैज्ञानिक, ए आर डी ई, पुणे विशिष्ट अतिथि थे। डॉ अ ल मूर्ति, निदेशक, डेसीडॉक ने संगोष्ठी के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि यह डेसीडॉक का प्रथम प्रयास है जिसमें डी आर डी ओ के अलावा अन्य शोध संस्थानों एवं शैक्षणिक विश्वविद्यालयों से लेख आमंत्रित किए गए हैं। डॉ पी एस गोयल ने अपने उद्घाटन उद्बोधन में इसरो तथा पर्यावरण मंत्रालय के अनुभवों को प्रतिभागियों एवं प्रबुद्धगणों के साथ बांटा। आपने संगोष्ठी के विषय की सामयिकता तथा उपयोगिता पर अपनी संतुष्टि व्यक्त की। डॉ गोयल ने ज्ञान प्रबंधन की आवश्यकता तथा लाभों को विस्तारपूर्वक अनेक उदाहरणों द्वारा समझाया।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि श्री सुरेन्द्र कुमार ने अपने उद्बोधन में विस्तारपूर्वक विभिन्न प्रक्षेपास्त्र तथा आयुध प्रणालियों के विकास में ज्ञान प्रबंधन के महत्व पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर डॉ पी एस गोयल द्वारा संगोष्ठी समारिका का विमोचन किया गया। उद्घाटन सत्र में डॉ अरुण कुमार, निदेशक, भर्ती तथा मूल्यांकन केन्द्र, दिल्ली ; डॉ ए के मैनी, निदेशक, लेसटेक ; डॉ पी के सक्सेना, निदेशक, एस ए जी ; श्री एस सी नारंग, अध्यक्ष, सेपटेम, दिल्ली तथा डी आर डी ओ मुख्यालय के अधिकारीगण भी उपस्थित थे। श्रीमती सुमति शर्मा, संगोष्ठी आयोजन सचिव एवं राजभाषा अधिकारी, डेसीडॉक ने मंच संचालन किया।

प्रथम सत्र ज्ञान प्रबंधन विषय पर था, इसके सत्राध्यक्ष श्री विनोद कुमार पांचाल, वैज्ञानिक एफ, डी टी आर एल, मेटकॉफ हाउस, दिल्ली थे। इस सत्र में 07 प्रस्तुतियां हुईं जिसमें श्रीमती वी एस खड़के, ए आर डी ई, पुणे की प्रस्तुति सर्वश्रेष्ठ चुनी गई। द्वितीय सत्र संरक्षण विषय पर था, इसकी सत्राध्यक्ष सुश्री दीक्षा बिष्ट, वैज्ञानिक एफ, निसकेयर, नई दिल्ली थीं। सुश्री दीक्षा बिष्ट ने इस अवसर पर हिन्दी में वैज्ञानिक लेखन विषय पर रोचक प्रस्तुति दी। इस सत्र में भी 07 प्रस्तुतियां हुईं जिसमें सुश्री पार्वती, एस एफ कॉम्प्लेक्स, जगदलपुर की प्रस्तुति सर्वश्रेष्ठ चुनी गई। तीसरा सत्र डिजिटल पुस्तकालय विषय पर था, इसके सत्राध्यक्ष श्री डी के कौशिक, वैज्ञानिक एफ, सीफीज, दिल्ली, थे। इस सत्र की 07 प्रस्तुतियों में से श्री योगेश मोदी, डेसीडॉक, दिल्ली की प्रस्तुति सर्वश्रेष्ठ चुनी गई।



मुख्य अतिथि संगोष्ठी स्मारिका का विमोचन करते हुए।

चौथा सत्र प्रौद्योगिकी विषय पर था, इसके सत्राध्यक्ष श्री आर के श्रीवास्तव, वैज्ञानिक एफ (सेवानिवृत्त), एस एस पी एल, दिल्ली, थे। इस सत्र में 09 प्रस्तुतियां हुईं जिसमें श्री निशांत कुमार, डेसीडॉक, दिल्ली की प्रस्तुति सर्वश्रेष्ठ चुनी गई। पांचवा सत्र नई दिशाएं विषय पर था, इसके सत्राध्यक्ष श्री नीलाम्बर पाण्डेय, निदेशक, राजभाषा प्रभाग, रक्षा मंत्रालय, सेना भवन, नई दिल्ली थे। इस सत्र में 07 प्रस्तुतियां हुईं तथा श्री ब्रजपाल, डेसीडॉक, दिल्ली, की प्रस्तुति सर्वश्रेष्ठ चुनी गई। संगोष्ठी का छठा सत्र विविधा विषय पर था, इसके सत्राध्यक्ष श्री राजेन्द्र प्रसाद, उपनिदेशक, राजभाषा तथा संगठन पद्धति निदेशालय, डी आर डी ओ भवन, नई दिल्ली, थे। इस सत्र में 07 प्रस्तुतियां हुईं जिनमें से श्री आशीष कुमार दीक्षित, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय की प्रस्तुति सर्वश्रेष्ठ चुनी गई।

दिनांक 13 फरवरी 2009 को संगोष्ठी के समापन सत्र में डॉ महेन्द्र सिंह, निदेशक, राजभाषा तथा संगठन पद्धति निदेशालय, डी आर डी ओ भवन, नई दिल्ली, मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर डॉ मानस कुमार मंडल, निदेशक, डी आई पी आर, दिल्ली, तथा डॉ विजय कुमार, उत्कृष्ट वैज्ञानिक, भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र, मुम्बई, विशिष्ट अतिथि थे। इस अवसर पर श्रीमती सुमति शर्मा, राजभाषा अधिकारी, डेसीडॉक तथा संगोष्ठी आयोजन सचिव ने मंच संचालन किया। डॉ अ ल मूर्ति, निदेशक, डेसीडॉक ने मुख्य अतिथि तथा विशिष्ट अतिथियों का स्वागत किया तथा संगोष्ठी के दौरान हुई प्रस्तुतियों की गुणवत्ता को सराहा। श्री फूलदीप कुमार, वैज्ञानिक बी ने संगोष्ठी की रिपोर्ट प्रस्तुत की। विशिष्ट अतिथि डॉ विजय कुमार ने अपने उद्बोधन में भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र में चल रहे ज्ञान प्रबंधन परिकल्पों के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि डॉ मानस कुमार मंडल ने अपने उद्बोधन में पिछले वर्ष की राष्ट्रीय संगोष्ठी की यादें ताजा कीं। आपने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में शिक्षक के रूप में अपने अनुभवों को बांटा। आपने बताया कि वे इस संगोष्ठी में हुई व्यापक प्रतिभागिता से हर्षित हैं।



समापन सत्र के अध्यक्ष, डॉ महेन्द्र सिंह, उपस्थित प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुए।

समापन सत्र के अध्यक्ष, डॉ महेन्द्र सिंह, निदेशक, राजभाषा तथा संगठन पद्धति निदेशालय, डी आर डी ओ भवन, नई दिल्ली ने अपने अध्यक्षीय भाषण में ज्ञान प्रबंधन विषय को दार्शनिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया। आपने संगोष्ठी की सफलता हेतु निदेशक, डेसीडॉक को बधाई दी तथा भविष्य में भी संगोष्ठी आयोजन हेतु मुख्यालय से पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। निदेशक, डेसीडॉक ने संगोष्ठी में महती योगदान के लिए श्रीमती सुमति शर्मा, वैज्ञानिक ई, श्री फूलदीप कुमार, वैज्ञानिक बी एवं श्री अशोक कुमार, सहायक हिन्दी को स्मृति-चिह्न देकर सम्मानित किया। अंत में श्रीमती सुमति शर्मा, संगोष्ठी आयोजन सचिव एवं राजभाषा अधिकारी, डेसीडॉक ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया।

डेसीडॉक दिल्ली द्वारा 02-06 फरवरी 2009 के दौरान सतत शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत साइंस कम्प्यूनिकेशन नामक विषय पर एक पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। डॉ एस एस मूर्ति, परामर्शदाता, एन टी आर ओ, ने इस

पाठ्यक्रम का उद्घाटन किया गया। श्रीमती रेणु अरोड़ा, निसकेयर, दिल्ली ने मुख्य सम्बोधन दिया। वैज्ञानिक एवं तकनीकी संचार, तकनीकी संचार कला, आधुनिक संचार मीडिया, वैज्ञानिक साहित्य का ऑनलाइन प्रकाशन/ओपन एक्सेस, तकनीकी संपादन कला, बौद्धिक सम्पदा अधिकार में वर्तमान अवधारणाओं से संबंधित विभिन्न विषयों पर डेसीडॉक एवं अन्य वक्ताओं द्वारा व्याख्यान दिये गये। डी आर डी ओ की विभिन्न प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं से अड़तीस प्रतिभागियों ने इस पाठ्यक्रम में भाग लिया। श्री अशोक कुमार, अपर निदेशक ने समापन सम्बोधन दिया तथा प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र प्रदान किए। श्रीमती शशी त्यागी, अपर निदेशक, पाठ्यक्रम निदेशक एवं श्रीमती सुमति शर्मा, वैज्ञानिक ई, पाठ्यक्रम सह-निदेशक एवं पाठ्यक्रम समन्वयक थीं।

रक्षा शरीरक्रिया एवं सम्बद्ध विज्ञान संस्थान, दिल्ली

रक्षा शरीरक्रिया एवं सम्बद्ध विज्ञान संस्थान (डिपास), दिल्ली ने 19-27 जनवरी 2009 के दौरान समूह घ कर्मियों के लिए ट्रेनिंग प्रोग्राम फॉर इम्पारटिंग मल्टी स्किल्स नामक विषय पर एक पाठ्यक्रम का आयोजन किया। डी आर डी ओ के मार्गनिर्देशन में व्यवहार एवं अनुशासन, सेवा लाभ एवं हकदारी, संगठन की आधारभूत समझ इत्यादि नामक विषयों को शामिल किया गया। इन विषयों के अंतर्गत फाइल की पहचान, कार्यक्षेत्र का रख-रखाव, आपसी व्यवहार, वार्तालाप कला, डाक संभालना, प्रलेखों का रख-रखाव, फोटोकॉपी, जिल्दसाजी, अग्निशमन, सुरक्षा तथा उपकरणों के रख-रखाव के विषय में जानकारी दी गई। इस सफल प्रशिक्षण कार्यक्रम में डी आई पी आर, डेसीडॉक, इनमास एवं डिपास से वक्ताओं को आमंत्रित किया गया। डॉ एस शारदा सूर्य कुमारी, वैज्ञानिक डी, पाठ्यक्रम निदेशक एवं श्री वी जी काले, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी-I पाठ्यक्रम समन्वयक थे।

उच्च ऊर्जा पदार्थ अनुसंधान प्रयोगशाला, पुणे

उच्च ऊर्जा पदार्थ अनुसंधान प्रयोगशाला (एच ई एम आर एल), पुणे ने 05-09 जनवरी 2009 के दौरान विस्फोटक एवं पर्यावरण सुरक्षा नामक विषय पर एक पाठ्यक्रम का आयोजन किया। डॉ श्रीमती चित्रा राजगोपाल, वैज्ञानिक जी, सीफीज, दिल्ली इस समारोह की मुख्य अतिथि थीं एवं इन्होंने उद्घाटन सम्बोधन दिया। पाठ्यक्रम में सुरक्षा से संबंधित विषय शामिल थे, जैसे व्यवसायिक सुरक्षा, पर्यावरण एवं प्रदूषण, इलैक्ट्रीकल सुरक्षा, अग्नि सुरक्षा, ई एस डी प्रणाली, एक्सीडेंट विश्लेषण, आपदा प्रबंधन, पाइरोटेक्नीक्स में सुरक्षा पहलू, बंदूक प्रणोदन, ठोस रॉकेट प्रणोदन, उच्च विस्फोटक, कम्ब्यूस्टीबल कार्टरिज केसिज प्रोसेसिंग इत्यादि। प्रतिभागियों को एच ई एम आर एल के विभिन्न विभागों से परिचित कराया गया। ऊषा अग्नि प्रणाली, पुणे, द्वारा अग्नि रोकथाम यंत्र पर किया गया प्रदर्शन बेहद सूचनात्मक था। डॉ ए शुभनंदा राव, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, एच ई एम आर एल, समापन समारोह के मुख्य अतिथि थे जिन्होंने प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र प्रदान किए। अपने समापन सम्बोधन में इन्होंने दैनिक जीवन में सुरक्षा की महत्ता विषय पर अपने विचार व्यक्त किये।

पद्धति अध्ययन तथा विश्लेषण संस्थान (ईसा), दिल्ली

पद्धति अध्ययन तथा विश्लेषण संस्थान (ईसा), दिल्ली में दिनांक 20 जनवरी 2009 को वाइस एडमिरल (सेवानिवृत्त) रमन पुरी, परम विशिष्ट सेवा मेडल, अति विशिष्ट सेवा मेडल, विशिष्ट सेवा मेडल ने प्रौद्योगिकी एवं राष्ट्रीय सुरक्षा नामक विषय पर व्याख्यान दिया। इस अवसर पर अध्यक्ष, कार्मिक प्रतिभा प्रबंधन केन्द्र (सेपटेम), दिल्ली, साथी प्रयोगशालाओं के निदेशक एवं ईसा तथा मेटकॉफ हाउस परिसर, दिल्ली की अन्य प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिक उपस्थित थे।

आपने अपने व्याख्यान में निम्न-तीव्रता के युद्ध, पारम्परिक युद्ध, बहुराष्ट्रीय, तथा नाभिकीय युद्ध पर प्रकाश डाला। आपने उभरते हुए युद्ध के क्षेत्रों, जैसे कि, नेटवर्क आधारित युद्ध, संयुक्त मुकाबला क्षमता, अंतरिक्ष तथा साइबर स्पेस युद्ध पर भी विस्तार से चर्चा की। आपने सूचना की शक्ति के लक्ष्यों, सीमाओं तथा प्रौद्योगिकियों के विषय में बताया। आपने स्वावलम्बन हेतु नई सोच की आवश्यकता पर बल दिया। आपने समन्वयन के लिए फिश बोन मॉडल के बारे में बताया। आपने बताया कि इंटरनेट तथा वाईमैक्स प्रौद्योगिकियों में अभिकल्पन तथा उच्च नेटवर्क क्षमता हेतु दक्षता का अभाव है तथा इस क्षेत्र में काफी निवेश की आवश्यकता है। आपने शरीफ तथा रामनाथन द्वारा बताये गये इस प्रौद्योगिकी के चार मुख्य अवयवों ह्यूमेनवेयर, इनफोवेयर, ओर्गेनोवेयर, तथा टैक्नोवेयर पर भी प्रकाश डाला।

रक्षा खाद्य अनुसंधान प्रयोगशाला, मैसूर

रक्षा खाद्य अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एफ आर एल), मैसूर में 29-30 जनवरी 2009 को भारत की सशक्तता, आत्मनिर्भरता एवं राजभाषा को प्रचारित करने में रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन का योगदान विषय पर एक दो-दिवसीय राजभाषा वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न रक्षा प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिकों, अधिकारियों, व कर्मचारियों ने भाग लिया।

वैज्ञानिक संगोष्ठी का उद्घाटन श्री विजय रंजन सिंह, निदेशक, श्री चामराजेन्द्रा चिड़ियाघर, मैसूर, ने किया और उन्होंने प्रयोगशाला के वैज्ञानिकों, अधिकारियों व कर्मचारियों को संबोधित करते हुए बताया कि इस प्रकार की संगोष्ठी के आयोजन से राजभाषा में वैज्ञानिकों, अधिकारियों, व कर्मचारियों को कार्य करने हेतु प्रोत्साहन मिलता है। प्रयोगशाला के निदेशक, डॉ ए एस बावा ने इस अवसर पर संगोष्ठी स्मारिका का विमोचन किया एवं अपने अध्यक्षीय भाषण में अधिक से अधिक हिन्दी में काम करने का आह्वान किया और साथ ही संगोष्ठी आयोजन अधिकारियों को धन्यवाद दिया।

डॉ जी के शर्मा, वैज्ञानिक एफ व सम्पर्क हिन्दी अधिकारी ने दो-दिवसीय राजभाषा वैज्ञानिक संगोष्ठी के उपलक्ष्य में मंच पर आसीन सभी गणमान्य सज्जनों का पुष्प गुच्छ द्वारा विशेष स्वागत किया एवं उपस्थित सभी का स्वागत किया। दो-दिवसीय राजभाषा वैज्ञानिक संगोष्ठी को पांच सत्रों में बांटा गया जिसमें 04 लेख राजभाषा तथा 25 वैज्ञानिक लेख प्रस्तुत किए गए। संगोष्ठी में विभिन्न प्रयोगशालाओं से डॉ एम सी पाण्डेय, डॉ ए डी सेमवाल, डॉ आलोक शाह, डॉ फरहत खानम, डॉ ओ पी चौहान, डॉ जी पी गुप्ता आदि वैज्ञानिकों ने भाग लिया। समापन समारोह का अंत श्रीमती भार्गवी आर गोपाल, हिन्दी अधिकारी के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

पुस्तक समीक्षा

अनुसंधान तथा विकास में ज्ञान प्रबंधन की भूमिका

अनुसंधान तथा विकास में ज्ञान प्रबंधन की भूमिका नामक पुस्तक 44 शोध-पत्रों/आलेखों का संकलन है जो कि रक्षा वैज्ञानिक सूचना तथा प्रलेखन केंद्र (डेसीडॉक), दिल्ली, द्वारा 12-13 फरवरी 2009 के दौरान आयोजित दो-दिवसीय अखिल भारतीय राजभाषा वैज्ञानिक/तकनीकी संगोष्ठी में प्रस्तुत किए गए। इस पुस्तक में छः विषयों के अंतर्गत अध्यायों को बांटा गया है। इसमें 29 शोध-पत्र/आलेख अनुसंधान संस्थानों तथा 15 शोध-पत्र/आलेख अकादमिक संस्थानों से हैं।

वर्तमान युग, सूचना प्रौद्योगिकी का युग है। इस युग में अग्रणी रहने के लिए अधिक से अधिक सूचना का संग्रहण आवश्यक है। सूचना के व्यवस्थित रूप को ज्ञान कहा जा सकता है। उपलब्ध सूचना स्रोतों से संचय कर तथा सूचना को व्यवस्थित रूप देकर ज्ञान का भण्डार तैयार किया जा सकता है। इस युग में ज्ञान इतना बढ़ गया है कि इसके प्रबंधन की आवश्यकता पड़ रही है ज्ञान आधारित संगठनों के लिए यह अति आवश्यक है। सभी आलेखों को विषय वस्तु के अनुसार छः विषयों में बांटा गया है, ये हैं, ज्ञान प्रबंधन, संरक्षण, डिजिटल पुस्तकालय, प्रौद्योगिकी, नई दिशाएं तथा विविधा। सभी विषयों/सत्रों के अंतर्गत सात आलेख हैं तथा प्रौद्योगिकी विषय के अंतर्गत नौ आलेख हैं। पुस्तक में अनुसंधान परियोजनाओं में ज्ञान प्रबंधन, डाटा संरक्षण तथा सम्प्रेषण, डिजिटल पुस्तकालय के निर्माण, डिजिटल इजेशन प्रक्रियाओं से संबंधित आलेख, सम्प्रेषण प्रौद्योगिकियों, नए संबंधित क्षेत्रों तथा बौद्धिक सम्पदा अधिकारों पर ज्ञानवर्धक तथा रोचक आलेख शामिल हैं।

इस पुस्तक का प्रकाशन रक्षा वैज्ञानिक सूचना तथा प्रलेखन केंद्र (डेसीडॉक), दिल्ली द्वारा किया गया है। इस पुस्तक में कुल 354 पृष्ठ हैं तथा इसका मूल्य रुपये 500/- (पांच सौ रुपये मात्र) है।



डॉ ए एस बावा संगोष्ठी स्मारिका का विमोचन करते हुए।



नियुक्ति

आयुध अनुसंधान तथा विकास स्थापना, पुणे



श्री अनिल एम दातार को आयुध अनुसंधान तथा विकास स्थापना (ए आर डी ई), पुणे, का निदेशक नियुक्त किया गया है। आपका जन्म 27 अक्टूबर 1955 को हुआ। आपने 1977 में राजकीय अभियांत्रिकी महाविद्यालय, पुणे विश्वविद्यालय से अभियांत्रिकी स्नातक (यांत्रिकी) उपाधि प्राप्त की। आपने पुणे विश्वविद्यालय से ही डी बी एम तथा एम बी ए की उपाधि प्राप्त की। आप 1982 में वैज्ञानिक बी के रूप में आयुध अनुसंधान तथा विकास स्थापना (ए आर डी ई), पुणे, में सम्मिलित हुए। आपको 1989 में रॉयल सैन्य विज्ञान महाविद्यालय, क्रैनफील्ड, इंग्लैंड, में बंदूक प्रणाली अभिकल्पन में स्नातकोत्तर (अभियांत्रिकी) पाठ्यक्रम में अध्ययन हेतु प्रतिनियुक्त किया गया। इस पाठ्यक्रम में आपने प्रथम स्थान प्राप्त किया तथा प्रतिष्ठित आर ओ एफ ट्रॉफी प्राप्त की। आपको 2003 में भारतीय उच्चायोग, लंदन में तकनीकी सलाहकार (रक्षा) के पद पर प्रतिनियुक्त किया गया। आपने यहां भारतीय उच्चायोग के रक्षा अनुसंधान तथा विकास एवं विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी दायित्वों को संभाला। आपको तीन वर्ष के सफल कार्यकाल के बाद ए आर डी ई स्थानांतरित किया गया।

आपको आयुध प्रणालियों के अभिकल्पन तथा विकास में समृद्ध अनुभव प्राप्त है। आपने 5.56 मिमी इनसास प्रणाली परियोजना के अभिकल्पन तथा विकास में कार्य किया है, जिसके अंतर्गत, बंदूक, एल एम जी तथा कारतूसों का विकास किया गया। आपने अपने व्यवसायिक जीवन का आरंभ इसी परियोजना से आरंभ किया तथा प्रौद्योगिकी हस्तांतरण चरण तक आप इसके परियोजना प्रमुख बने। आपने इस प्रणाली के उत्पादन कार्य का सफल नेतृत्व किया। आज सेना तथा कुछ अर्धसैनिक बलों को इनसास राइफल से सुसज्जित किया जा चुका है। आपने सबमशीन कार्बाइन परियोजना पर भी कार्य किया है जो कि अभी पूर्णता की ओर अग्रसर है। आपने सैनिक : एक प्रणाली अभिधारणा पर भी गहन अध्ययन किया है तथा इस प्रणाली विकास पर भी कार्य आरंभ हो गया है। आप आई सी वी आयुध विकास तथा 40 मिमी एफ एस ए पी डी एस गोला बारूद विकास परियोजना के मुख्य स्तम्भ रहे, जो कि प्रौद्योगिकी प्रदर्शन में सफल रही। वर्तमान में आप पिनाका प्रणाली के प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, पिनाका ट्रेजेक्टरी सुधार प्रणाली, तथा अर्जुन टैंक के गोला बारूद के प्रौद्योगिकी हस्तांतरण में संलग्न हैं।

आपको वर्ष का वैज्ञानिक पुरस्कार-1998 प्राप्त है। आप इनसास प्रौद्योगिकी हस्तांतरण हेतु पुरस्कृत दल के सदस्य भी हैं। आप अभियंता संस्थान (भारत) के अध्यक्ष तथा यांत्रिक अभियंता संस्थान (भारत) के सदस्य हैं। आप भारतीय वैमानिकी समिति के आजीवन सदस्य हैं तथा भारतीय वांतरिक्ष तथा सम्बद्ध यंत्र रचना समिति (आई एन एस ए आर एम) के उपाध्यक्ष हैं।

प्रोन्नति



श्री एस पी गाबा को जुलाई 2008 से प्रभावी नियुक्ति में वैज्ञानिक जी प्रोन्नत किया गया है। आपने गढ़वाल विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर (भौतिकी) उपाधि प्राप्त की तथा रुड़की विश्वविद्यालय (वर्तमान में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आई आई टी, रुड़की) से 1979 में एम फिल यंत्रीकरण उपाधि प्राप्त की। आप 1981 में यंत्र अनुसंधान तथा विकास स्थापना (आई आर डी ई), देहरादून में वैज्ञानिक बी के रूप में सम्मिलित हुए। आप लेजर-दूरी मापक तथा निर्धारकों के विकास में संलग्न रहे हैं। आपके प्रयासों से समेकित निगरानी उपकरण हेतु लेजर-दूरी मापक तथा फासला-मापक यंत्र को अनेक चरणों के परीक्षण पश्चात सेना में शामिल किया गया।

श्री गाबा को मुख्य टैंक के आई जी एम हेतु स्वदेशी लेजर-दूरी मापक के विकास में महत्वपूर्ण योगदान हेतु डी आर डी ओ प्रौद्योगिकी सम्मान, 1977 प्राप्त है। आपने अनेक जर्नलों तथा संगोष्ठियों में 20 शोध-पत्र प्रकाशित/प्रस्तुत किए हैं। आप भारतीय लेजर संघ, भारतीय प्रकाशकीय समिति तथा भारतीय उपकरण समिति के आजीवन सदस्य हैं।

सेवानिवृत्ति

आयुध अनुसंधान तथा विकास स्थापना, पुणे



श्री सुरेन्द्र कुमार ने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आई आई टी), खड़गपुर, से 1972 में वैमानिकी अभियांत्रिकी में स्नातक उपाधि प्राप्त की। आपने भारतीय विज्ञान संस्थान (आई आई एस), बेंगलूर से 1974 में राकेट तथा प्रक्षेपास्त्र में विशेषज्ञता सहित वैमानिकी अभियांत्रिकी में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की। आपने अपने व्यवसायिक जीवन का आरम्भ 1974 में रक्षा अनुसंधान तथा विकास प्रयोगशाला (डी आर डी एल), हैदराबाद, से किया, यहां आपने द्रव्य प्रणोदक विभाग में भारत के प्रथम एल पी इंजन का विकास कार्य किया। आपके प्रयासों से नई पीढ़ी के प्रक्षेपास्त्रों के विकास हेतु प्रौद्योगिकियां विकसित की गईं। आपने उप-परियोजना निदेशक के रूप में सेना में पृथ्वी प्रक्षेपास्त्र को शामिल कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस प्रणाली की क्षमताएं वायु सेना तथा नौसेना हेतु भी महत्वपूर्ण थीं जिनका विकास भी आपके नेतृत्व में हुआ। आपने अपने क्षेत्र में ज्ञान का अर्जन किया तथा आज आप प्रक्षेपास्त्र प्रौद्योगिकी के चुने हुए विशेषज्ञों में शामिल हैं।

आपने अनेक प्रकार के युद्धशीर्षों का विकास करने के साथ ही एक नवीन युद्धशीर्ष परीक्षण वाहन, जो कि अपने आपमें एक प्रक्षेपास्त्र है, का अभिकल्पन तथा विकास किया। इस वाहन का उपयोग कर आपने युद्धशीर्ष के 30 गतिकीय परीक्षण किए जिससे सरकार को करोड़ों रुपये की बचत हुई अन्यथा इन परीक्षणों हेतु 30 प्रक्षेपास्त्रों की आवश्यकता पड़ती। आपको सम्मिश्रित युद्धशीर्षों के अल्पकाल में सफल अधिष्ठापन हेतु उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन हेतु आई वी पुरस्कार, 2006 प्राप्त है।

आपके तकनीकी प्रबंधकीय कौशल को पहचानकर आपको बैलेस्टिक प्रक्षेपास्त्र प्रतिरक्षा प्रणाली हेतु उन्नत प्रक्षेपास्त्र प्रणाली विकास के परियोजना निदेशक का पदभार 1998 में सौंपा गया। आपने इस प्रणाली के विकास हेतु वैज्ञानिकों के दल का नेतृत्व किया, इस प्रणाली के वर्ष 2006 तथा 2007 के परीक्षण सफल रहे। आपको राष्ट्र के प्रति समर्पित भाव से कार्य करने हेतु डी आर डी ओ उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन सम्मान, 1999 एवं 2005 तथा वर्ष का सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक पुरस्कार, 2002 प्राप्त हैं। आपको वर्ष का वैज्ञानिक पुरस्कार, 2004 तथा उत्कृष्ट प्रौद्योगिकी विकास हेतु डी आर डी ओ पुरस्कार, 2006 भी प्राप्त हैं।

आप साहसी खेलों साहित्य तथा संगीत में रुचि रखते हैं। आप अनेक व्यवसायिक संस्थानों जैसे कि भारतीय वैमानिकी समिति, भारतीय खगोलशास्त्र समिति, भारतीय गुणवत्ता तथा आश्वासन संघ इत्यादि के सजग सदस्य हैं।

डी आर डी ओ

रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन (डी आर डी ओ), रक्षा मंत्रालय के रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग के अंतर्गत कार्य करता है। डी आर डी ओ रक्षा प्रणालियों में आत्मनिर्भरता बढ़ाने के लिए समर्पण भाव से कार्य करता है। यह तीनों सेनाओं द्वारा मांगी गई गुणात्मक आवश्यकताओं के अनुसार विश्वस्तरीय शस्त्र प्रणालियों एवं उपकरणों के अभिकल्पन, विकास, एवं उत्पादन में संलग्न है।

पेटेंट अनुमोदित

अग्नि, पर्यावरण एवं विस्फोटक सुरक्षा केंद्र, दिल्ली

भारतीय पेटेंट कार्यालय, नई दिल्ली द्वारा वर्ष 2002 से अग्नि, पर्यावरण एवं विस्फोटक सुरक्षा केंद्र (सीफीस), दिल्ली, के वैज्ञानिकों एवं कार्मिकों के नाम निम्नलिखित तीन पेटेंट अनुमोदित किए गए हैं :

- फायर प्रोटेक्टिव फैब्रिक फॉर फायर प्रोक्सीमिटी सूट एंड ए प्रोसेस फॉर प्रीप्रेसन देयरऑफ (पेटेंट संख्या 221667)
- फायर प्रोटेक्टिव कम्पोजिट फैब्रिक फॉर फायर एप्रोच सूट एंड ए प्रोसेस फॉर प्रीप्रेसन देयरऑफ (पेटेंट संख्या 221668)। श्री राजपाल सिंह, श्री प्रवीण राजपूत एवं श्री गौतम प्रकाश कश्यप उपरोक्त दोनों पेटेंटों के अन्वेषक हैं।
- फायर प्रोटेक्टिव फैब्रिक फॉर फायर प्रोक्सीमिटी सूट एंड ए प्रोसेस फॉर प्रीप्रेसन देयरऑफ (पेटेंट संख्या 221708)। श्री शिप्रा मिश्रा, श्री सतीश कुमार एवं श्री विवेक कुमार इसके अन्वेषक हैं।

नौसेना भौतिक तथा समुद्रविज्ञान प्रयोगशाला, कोच्चि

भारतीय पेटेंट कार्यालय, नई दिल्ली द्वारा एन अंडरवाटर इलैक्ट्रोमिकेनिकल कनेक्टर (पेटेंट संख्या 224234) पर एक पेटेंट अनुमोदित किया गया है। नौसेना भौतिक तथा समुद्रविज्ञान प्रयोगशाला (एन पी ओ एल), कोच्चि, के श्री के अजीतकुमार, वैज्ञानिक एफ, इसके अन्वेषक हैं। यह पेटेंट एक उत्पाद के विकास पर है।

भारत निर्माण अभियान में डी आर एल, तेजपुर

रक्षा अनुसंधान प्रयोगशाला (डी आर एल), तेजपुर, के डॉ एम के मेघवंशी, वैज्ञानिक सी एवं श्री बी दास, वरिष्ठ तकनीकी सहायक ए ने 19-21 नवम्बर 2008 के दौरान सेप्पा, पूर्वी केमंग जिला, अरुणाचल प्रदेश में आयोजित भारत निर्माण अभियान में भाग लिया। इसका आयोजन सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार तथा 5 माउंटेन प्रभाग, टेंगा ने संयुक्त रूप से किया। इस अभियान के दौरान प्रदर्शनी में डी आर एल के विभिन्न उत्पादों/प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन किया गया तथा आगंतुकों को उनके बारे में बताया गया। इस प्रदर्शनी में बहुत से गणमान्य अतिथियों ने भाग लिया जैसे कि जनरल (सेवानिवृत्त) जे जे सिंह, राज्यपाल, अरुणाचल प्रदेश, ब्रिगेडियर अनिल कुमार गुप्ता, डिप्टी जी ओ सी, 5 माउंट डिविजन, ब्रिगेडियर पी के श्रीवास्तव, कमांडर आर्टिलरी, 5 माउंट डिविजन, विधान सभा सदस्य, सेप्पा, सेप्पा जिला प्रशासन के अधिकारी, 5 माउंट डिविजन के सिपाही एवं स्थानीय लोग। आगंतुकों की प्रतिक्रिया बहुत अच्छी थी और उन्होंने उत्पादों/प्रौद्योगिकियों के बारे में जानने में उत्सुकता दिखाई। सभी गणमान्य अतिथियों ने डी आर एल द्वारा सैन्य बलों एवं के लिए विकसित किए जा रहे उत्पादों/प्रौद्योगिकियों के प्रयासों की प्रशंसा की।



जनरल (सेवानिवृत्त) जे जे सिंह, राज्यपाल, अरुणाचल प्रदेश, डी आर एल के उत्पादों में गहरी रुचि लेते हुए।

डी आर डी ओ स्वर्ण जयंती प्रतियोगिता

रक्षा विज्ञान मंच ने डी आर डी ओ स्वर्ण जयंती समारोह के रूप में डी आर डी ओ स्वर्ण जयंती प्रतियोगिता का आयोजन किया। प्रतियोगिता का आयोजन डी आर डी ओ प्रशासनिक/वित्त/भण्डार एवं सम्बद्ध कर्मियों (अराजपत्रित अधिकारियों) के लिए किया गया। इस प्रश्नावली में डी आर डी ओ उत्पाद/सेवाएं/प्रौद्योगिकियां/मानव संसाधन/मूलभूत नियम एवं सामान्य ज्ञान पर आधारित प्रश्नों को शामिल किया गया।

इस प्रतियोगिता में 1500 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। देश भर की डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं के शीर्ष 12 विजेताओं से डी एस एफ सदस्यों द्वारा 09 जनवरी 2009 को दूरभाष पर प्रश्न पूछे गए जिनके आधार पर चार शीर्ष विजेताओं का चयन किया गया। इस प्रतियोगिता के विजेताओं का वर्णन इस प्रकार है :



हास्य कवि श्री सुरेन्द्र शर्मा, उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते हुए।

श्री संतोष कुमार चौधरी, प्रशासनिक सहायक ए, अनुसंधान केंद्र इमारत (आर सी आई), हैदराबाद; श्री रितेश रंजन, हिन्दी सहायक, एकीकृत परीक्षण परिसर (आई टी आर), चांदीपुर; हवलदार/क्लर्क कडलाग संतोष, एकीकृत परीक्षण परिसर (आई टी आर), चांदीपुर; एवं श्री राम सिंह, वरिष्ठ तकनीकी सहायक बी, नाभिकीय

औषधि तथा सम्बद्ध विज्ञान संस्थान (इनमास), दिल्ली।

डी आर डी ओ के अराजपत्रित कर्मियों की प्रतिभागिता का धन्यवाद करने तथा प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान करने के लिए रक्षा विज्ञान मंच द्वारा 13 जनवरी 2009 को भगवंतम सभागार, मेटकॉफ हाउस, दिल्ली, में जीवन और हास्य पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन



रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार, श्री एम नटराजन, प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान करते हुए।

किया गया। इसके मुख्य अतिथि थे मशहूर हास्य कवि श्री सुरेन्द्र शर्मा।

डी आर डी ओ स्वर्ण जयंती छात्र प्रतियोगिता

डी आर डी ओ स्वर्ण जयंती समारोह के रूप में डी आर डी ओ ने राष्ट्रीय स्तर पर इंजीनियरिंग छात्रों के लिए नवीन अभियांत्रिक उत्पादों के अभिकल्पन तथा विकास पर विचारों की प्रतियोगिता का आयोजन किया। इसमें बी ई/बी टैक के तीसरे/चौथे वर्ष तथा एम ई/एम टैक के छात्रों ने भाग लिया। प्रतियोगिता का मुख्य विषय **मितव्ययी बाहरी निगरानी प्रणाली** था।

दो वर्गों में नकद पुरस्कार दिए गए। प्रथम वर्ग में, प्राप्त प्रविष्टियों में से चयन समिति द्वारा 10 प्रविष्टियों का चयन किया गया। सभी 10 टीमों को 50000 रुपये तथा प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। द्वितीय चरण में प्रथम चरण के विजेताओं को, कार्यात्मक प्रारूप के साथ उसकी विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत करनी होगी जिसे जांच कमेटी देखेगी। इसमें शीर्ष दो प्रविष्टियों को क्रमशः तीन लाख तथा दो लाख रुपये का पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र दिया जाएगा।

प्रथम चरण में चयनित टीमों, जिन्हें द्वितीय चरण की डी आर डी ओ छात्र प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए चुना गया है :

- थापर विश्वविद्यालय, पटियाला
- दिल्ली अभियांत्रिकी महाविद्यालय, दिल्ली
- मद्रास प्रौद्योगिकी संस्थान, अन्ना विश्वविद्यालय, चेन्नई
- श्री राम मूर्ति स्मारक अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, बरेली
- भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आई आई टी) मद्रास, चेन्नई
- एन आई टी, सूरथकल, कर्नाटक
- राजलक्ष्मी अभियांत्रिकी महाविद्यालय, थंडालम, चेन्नई
- एमिटी अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी विद्यालय, नोएडा
- एन आई टी, सिलचर, असम
- वीरमाता जीजाबाई प्रौद्योगिकीय संस्थान, माटुंगा, मुम्बई

द्वितीय चरण की प्रतियोगिता अप्रैल 2009 के पहले पखवाड़े में आयोजित की जाएगी।

सम्मान

श्रीमती टेसी थॉमस, उन्नत प्रणाली प्रयोगशाला (ए एस एल), हैदराबाद, की वरिष्ठ वैज्ञानिक, जिन्हें मिसाइल वूमन के नाम से भी जाना जाता है, को 06 फरवरी 2009 को प्रतिष्ठित **इंडिया टुडे वर्ष की महिला सम्मान** प्रदान किया गया।

श्रीमती थॉमस अग्नि प्रक्षेपास्त्र पर कार्य कर रही हैं तथा इसकी मार्गनिर्देशन प्रणाली के विकास में संलग्न रही हैं। आपने अग्नि-1, अग्नि-2 तथा अग्नि-3 प्रक्षेपास्त्रों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आप वर्तमान में अग्नि प्रक्षेपास्त्र के उन्नत स्वरूप के विकास का नेतृत्व कर रही हैं।

श्रीमती थॉमस ने 1985 में विद्युतकीय अभियांत्रिकी में प्रौद्योगिकी स्नातक उपाधि प्राप्त की तथा इसके बाद निर्देशित प्रक्षेपास्त्र प्रौद्योगिकी में अभियांत्रिकी स्नातक उपाधि प्राप्त की। आपने प्रक्षेपास्त्र के क्षेत्र में अभिकल्पन, मार्गनिर्देशन, नियंत्रण, इनर्शियल नेवीगेशन तथा ट्रेजेक्टरी अभिरूपण के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है आपके प्रयासों से देश में प्रथम बार ठोस प्रणोदक लम्बी दूरी प्रणाली का अभिकल्पन तथा विकास हुआ है। आपको **आत्मनिर्भरता में उत्कृष्टता सम्मान-2001** तथा **डी आर डी ओ उत्कृष्ट प्रौद्योगिकी विकास सम्मान-2007** प्राप्त हैं।



डी आर डी ओ दिवस समारोह

नौसेना भौतिक तथा समुद्रविज्ञान प्रयोगशाला, कोच्चि

नौसेना भौतिक तथा समुद्रविज्ञान प्रयोगशाला (एन पी ओ एल), कोच्चि, ने 01 जनवरी 2009 को डी आर डी ओ दिवस समारोह का



निदेशक, एन पी ओ एल, उपस्थित लोगों को सम्बोधित करते हुए।

आयोजन किया। इसके अंतर्गत बहुत से कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार के संदेश से कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। श्री एस अनंतनारायणन, निदेशक, एन पी ओ एल ने उपस्थित लोगों को सम्बोधित किया। आपने प्रयोगशाला द्वारा प्राप्त की गई महत्वपूर्ण उपलब्धियों तथा भविष्य की योजनाओं पर प्रकाश डाला। समूह प्रमुखों ने 2008 में विकसित नई प्रौद्योगिकियां पर प्रस्तुति दी जो कि भविष्यत् प्रमुख योगदानों एवं वचनबद्धता की समीक्षा थी।

अनुसंधान केंद्र इमारत, हैदराबाद

अनुसंधान केंद्र इमारत (आर सी आई), हैदराबाद, ने 01 जनवरी 2009 को डी आर डी ओ दिवस समारोह का आयोजन किया। श्री के राम शर्मा, वैज्ञानिक जी, डी ओ एम एस, आर सी आई ने अपने स्वागत सम्बोधन में डी आर डी ओ दिवस की महत्ता बताई। आर सी आई के विभिन्न निदेशालयों के प्रौद्योगिकी निदेशकों ने अपने कार्यक्षेत्रों में वर्ष 2008 की उपलब्धियां एवं वर्ष 2009 के लक्ष्यों पर प्रस्तुतियां दीं। श्री एस के रे, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, आर सी आई ने समारोह की अध्यक्षता की। आपने सभी कार्मिकों को नववर्ष की शुभकामनाएं दीं। आपने आर सी आई के कार्मिकों को 2008 की उपलब्धियों एवं ए डी, ब्रह्मोस, आकाश, नाग, एवं के-15 के सफल उड़ान परीक्षणों पर बधाई दी। आपने विभिन्न प्रक्षेपास्त्र परियोजनाओं को समय से पूर्ण करने के लिए आर सी आई के संसाधनों के बेहतर उपयोग पर बल दिया। आपने डी आर डी ओ मध्य क्षेत्र कैरम प्रतियोगिता के विजेताओं को समृति-चिन्ह भी प्रदान किए।

खेलकूद गतिविधियां

साइकिल रैली

संग्राम वाहन अनुसंधान तथा विकास स्थापना (सी वी आर डी ई), चेन्नई, ने डी आर डी ओ स्वर्ण जयंती समारोह के एक भाग के रूप में 02-05 जनवरी 2009 के दौरान एक साइकिल रैली का आयोजन किया। डी आर डी ओ की क्षेत्रीय प्रयोगशालाओं से 22 प्रतिभागियों ने इसमें भाग लिया।

डी आर डी ओ खेल बोर्ड, नई दिल्ली के अध्यक्ष तथा निदेशक, समाघात वाहन एवं अभियांत्रिकी, श्री आर शंकर ने श्री एस सुंदरेश, निदेशक, सी वी आर डी ई तथा श्री आर जयकुमार, सह निदेशक, सी वी आर डी ई की गरिमामयी उपस्थिति में इसे झंडी दिखाकर आरम्भ किया। इस अवसर पर सी वी आर डी ई के सभी कार्मिक उपस्थित थे।

इस रैली का उद्देश्य सी वी आर डी ई एवं डी आर डी ओ, जो कि ट्रैक्ड कवचित लडाकू वाहनों के अभिकल्पन एवं विकास एवं सैन्य



श्री एस सुंदरेश, निदेशक, सी वी आर डी ई, झंडी दिखाकर रैली को रवाना करते हुए।

आवश्यकताओं हेतु रक्षा प्रणालियों में आत्मनिर्भरता को बढ़ाने के विषय में जागरूकता पैदा करना था। रैली में भाग लेने वाले प्रतिभागी जब वापस सी वी आर डी ई लौटे तो सी वी आर डी ई के कार्मिकों ने उनका स्वागत किया तथा 05 जनवरी 2009 को समापन समारोह का आयोजन किया गया।

प्रदर्शनी में प्रतिभागिता (कोसाम्बा-2009)

प्रमाण तथा प्रायोगिकी स्थापना (पी एक्स ई), चांदीपुर, ने 17-20 जनवरी 2009 के दौरान पुलिस लाइन फील्ड, बालासोर, में आयोजित जिला महोत्सव (कोसाम्बा-2009) में भाग लिया। इसमें अजय टैंक, 155 मिमी बोफोर्स बंदूक, 130 मिमी फील्ड बंदूक एवं 105 मिमी आई एफ जी इत्यादि शस्त्रों का प्रदर्शन किया गया। महत्वपूर्ण यंत्रों, जैसे कि डोपलर रडार, ड्रेलो लाइट बेरियर, बस्ट टाइम मीजरिंग सिस्टम, ऑस्लोस्कोप विद पिजो गैंग सिस्टम, जी पी एस प्रणाली, उच्च गति एस वी आर कैमरा, सी सी टी वी एवं विभिन्न निगरानी यंत्रों का प्रदर्शन किया गया। डी आर डी ओ एवं पी एक्स ई की गतिविधियों एवं उपलब्धियों पर एक वीडियो प्रस्तुति दी गई। डॉ ए के सन्निग्रही, वैज्ञानिक के नेतृत्व में पी एक्स ई के 20 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने शस्त्रों एवं यंत्रों का प्रदर्शन किया। रोजाना बहुत से आगंतुकों ने पी एक्स ई स्टॉल एवं शस्त्रों को देखने में गहरी रूचि दिखाई।



प्रदर्शनी में विभिन्न टैंकों को देखते हुए आगंतुक।

डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं में पधारे अतिथिगण

रक्षा इलैक्ट्रॉनिकी अनुसंधान प्रयोगशाला, हैदराबाद



डॉ एस सी पाण्डेय को विभिन्न परियोजनाओं की जानकारी देते हुए डी एल आर एल के निदेशक, श्री जी भूपति।

15 जनवरी 2009 : डॉ एस सी पाण्डेय, अपर वित्तीय सलाहकार (पी) एवं संयुक्त सचिव।

प्रमाण तथा प्रायोगिकी स्थापना, चांदीपुर

12 जनवरी 2009 : श्री एम ए खरबेला स्वेन, बालासोर

के सांसद। मेजर जनरल अनूप मल्होत्रा, निदेशक, पी एक्स ई ने विभिन्न आयुध भण्डारों के परीक्षण एवं मूल्यांकन से संबंधित विभिन्न गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण दिया।

उच्च ऊर्जा पदार्थ अनुसंधान प्रयोगशाला, पुणे



मेजर जनरल पी वी के मेनन, प्रदर्शनी में गहरी रूचि लेते हुए।

15 जनवरी 2009 : मेजर जनरल पी वी के मेनन, एम जी ए ओ सी, मुख्यालय, उत्तरी कमांड।

मुख्य सम्पादक	सह मुख्य सम्पादक	सम्पादक	सह सम्पादक	सम्पादकीय सहायक	मुद्रण	विपणन
डॉ अ ल मूर्ति	शशी त्यागी	सुमति शर्मा	फूलदीप कुमार	अशोक कुमार	बी नित्यानंद एस के गुप्ता	एम जी शर्मा आर पी सिंह

डॉ अ ल मूर्ति, निदेशक, डेसीडॉक द्वारा डी आर डी ओ की ओर से मुद्रित एवं प्रकाशित

प्रकाशक : डेसीडॉक, मेटकॉफ हाउस, दिल्ली.110054 ; दूरभाष : 011-23812252 ; फैक्स : 011-23819151 ; ई-मेल : dirdesidoc@vsnl.net